Today's Poem – 02.06.2014

अवगुणों को निकालने का पुरुषार्थ करना

कमी का पोतामेल रखना यही है गुणवान बनना

एक बाप से सुनना उन्हें ही देखना

देहिअभिमानी होकर रहना

देह-अभिमान में आने से पाप ज़रूर होते

बाप की याद से पाप भस्म होते

अन्दर की बीमारियाँ बाप को सच-सच है बताना

पढ़ाई से स्वयं को गुणवान बनाना

सदा उत्साह में रहना

दूसरों को उत्साह दिलाना

प्रसन्नचित रहना

प्रश्नचित नहीं

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!